STATE AWARDER

RUPA SINHA (Gold Medalist)
Hindustani Classical singer, Stage Performer &
Music Tr. KVS
Research Scholar UUC, Bhubaneswar
M.A, Music & Performing of arts
Career Counselor in Music & Performing of arts
E-mail- rupasinhasabrang@gmail.com
Mob-8709508264

ABSTRACT

"झारखण्ड के मधुर एवं पारंपरिक नागपुरी लोकसंगीत की शास्त्रीयता" पर प्रकाश डालने के लिए इन बिन्दुओं पर चर्चा:-

1. **ललित कलाओं मे संगीत का स्थान :-**
   64 कलाओं में ललित कला का महत्वपूर्ण स्थान है । ललित कला के अंतर्गत पाँच कलाएं आती है-चित्र कला, वास्तुकला, काव्य कला, स्थापत्य कला, संगीत कला, इनमें से संगीत कला अधिक प्रभाव डालने वाली कला है । मनुष्य के हृदय में सोये हुए भावों को जगाने में जितना सक्षम है, उतनी और कोई विधा नहीं जो कुछ चित्र से नहीं कहा जा सकता, वह काव्य या भाषा से कह दिया जाता है और जिन भावो को व्यक्त करने में भाषा भी असमर्थ रहती है, उन्हे संगीत के जरिये आसानी में समझा जा सकता है ।
   केवल संगीत हीं ऐसी कला है जो श्रोताओं से सीधा संबंध रखती है आई इसे किसी भी माध्यम की आवश्यकता नहीं होती है ।
2. **भारतीय संगीत में सौन्दर्य बोध एवं रस सिद्धान्त:-**
   रसों के प्रमुख आधार भाव हीं है । इन भावों को स्थायी भाव की संज्ञा दी गई है ।
   जैसे, क्षृंगार - रति , हास्य - हास , करुण - शोक , रौद्र - क्रोध , वीर -उत्साह ,भयानक - भय , वीभत्स - जुगुप्सा , अद्भुत-विषमय , शांत -निर्वेद
3. **भारतीय संगीत की दो मुख्य धाराएँ शास्त्रीय संगीत एवं लोकसंगीत :-**
   जो शास्त्र के नियम अनुसार प्रस्तुत किया जाय उसे शास्त्रीय संगीत और कोई भी व्यक्ति उन्मुक्त रूप से गुनगुना उठे उसे लोक संगीत । आज का तथाकथित शास्त्रीय संगीत स्वामी हरिदास, तानसेन, बैजु वाबरा इत्यादि महान संगीतकारों की विरासत या अग्नावशेष है, तो भारत के विभिन्न प्रांतो के ग्रामीण अंचलों में फैला हुआ लोक संगीत मानवीय उल्लास की चटक चाँदनी है । शास्त्रीय संगीत मनुष्य द्वारा निर्मित सिद्धांतों की वंदिश में रहता है । जबकि लोक संगीत का निर्माण प्रकृति की प्रेरणा से या मानव हृदय से निश्रित सुख अथवा दुख के भावों से होता है । अर्थात एक शास्त्र प्रधान है तो दूसरा समाज प्रधान ।
4. **झारखंड का नागपुरी लोकसंगीत एवं लोकधुन:-**
   नागपुरी संस्कृति में चलना हीं नृत्य है बोलना हीं संगीत है और वक्ष व नितंब हीं मंदार है । कोई भी संस्कार हो, उत्सव हो, पर्व- त्योहार हो, मेला- जतरा हो बिना नृत्य संगीत के संपन्न हो हीं नहीं सकता । झारखंड एक सांस्कृतिक प्रधान राज्य है, कहाँ नहीं है संगीत प्रकृति में जो प्राकृतिक संगीत समाया हुआ है वह बादलों की गड़गड़ाहट में, पवन के शोर में, नदियों की कलकल-छलछल में, झरनों के झर-झर में, पक्षियों के कलरव गान में, पशुओ के रंभाने में, वृक्ष के पत्तों की तालियों में ।
5. **राग, रागिणीया, व्याकरण (स्वर, ताल, प्रहर, जाति, वादी, संवादी) पर आधारित नागपुरी लोकगीत:-**
   कोई भी गान या गीत बिना राग पर आधारित नहीं होता । किसी न किसी राग के माध्यम से हीं उस गीत का निर्माण होता है । गीत की शास्त्रीयता को जानने के लिए स्वर समूहों एवं उसके व्याकरण को पहले जानना ।
6. **नागपुरी लोकगीतों को स्वरलीपि बद्ध करना :-**
   ताल लय एवं मात्रा में नियम बद्ध करते हुए लोक गीतों की स्वरलिपियों को बनाना अति आवश्यक है जिससे आने वाली पीढ़ी को लोकगीतों को समझने एवं गाने में आसानी हो ।
7. **सांस्कृतिक स्थल अखरा को बचाना :-**
   तभी सांस्कृतिक स्थल अखरा को बचाया जा सकता है ।